International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 06-03-2026, Accepted: 06-04-2026, Published: 21-04-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 81-82

भारतीय ज्ञान परंपरा में महिलाओं का योगदान

डॉ. माया सगरे – लक्का
सह आचार्य, रेवा विश्वविद्यालय, बेंगलुरु, कर्नाटक, भारत

सारांश
भारतीय संस्कृति और ज्ञान परंपरा में महिलाओं का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण और विशिष्ट रहा है | वैदिक युग से आधुनिक युग तक नारी केवल जीवन दासिनी नहीं रही है | शिक्षा, दर्शन, साहित्य, कला, धर्म इनमें भी उसका योगदान रहा है | ऋग्वेद और उपनिषद काल में स्त्रियों को आध्यात्मिक और दार्शनिक विमर्श में समान अधिकार मिला | जैसे–जैसे समय परिवर्तित हुआ, उन्हें सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक परिस्थितियों में हुए परिवर्तनों ने उनकी भूमिका को ही प्रभावित किया | स्मरुति काल में स्त्रियों को शिक्षा और ज्ञानर्जन से दूर कर दिया गया था | उन्हें परिवार तक ही सीमित रखा गया था | लेकिन भक्ति काल में फिर से स्त्रियों ने अपनी भक्ति और ज्ञान को समाज के सामने लाने का प्रयास किया | मीराबाई, अक्का महादेवी जैसी महिलायें ज्ञान और आध्यात्मिकता की संवाहक बनी | तत्पश्चात आधुनिक युग में सामाजिक सुधार आंदोलन की शुरुआत हुई | तब महिलाओं की शिक्षा और अधिकारों के लिए सावित्रिबाई फुले, पंडिता रमाबाई आदि महिलाएं कार्यरत हुई | इस शोध पत्र में वैदिक काल से आधुनिक काल तक भारतीय ज्ञान परंपरा में महिलाओं का योगदान रहा है इसे उदाहरणों के साथ विश्लेषण किया गया है | इस आलेख में महिलाओं की भूमिका किस प्रकार विकसित हुई, किस प्रकार उस पर रोक लगाई गई और फिर अपने बलबूते पर उसने किस प्रकार अपनी पहचान बनाई यह स्पष्ट किया गया है |

मूल शब्दः वैदिक, भारतीय ज्ञान परंपरा, स्त्री विमर्श, नारी शिक्षा

भारतीय ज्ञान परंपरा में महिलाओं का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है | स्त्री के अनेक रूप है जिसमें वह मां, बहन, पत्नी, पुत्री, सखी परिवार से संबंधित है तो सरस्वती ज्ञान से सम्बंधित है, लक्ष्मी धन से तो दुर्गा / काली शक्ति के रूप में पूजनीय है | वैदिक काल वास्तव में दो कालों में बांटा गया है | 1. पूर्व वैदिक काल जो 1500 से 1000 ईसा पूर्व का है और 2. उत्तर वैदिक काल जो 1000 से 600 ईसा पूर्व का है | इस काल में आर्य लोग सिंधु और गंगा के मैदानों में बस गए और उन्होंने ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद के माध्यम से भारतीय संस्कृति, दर्शन और वर्ण व्यवस्था की नींव रखी | इसी वैदिक काल के युग में भारत विश्व गुरु के रूप में जाना जाता था | भारतीय वेदों, शास्त्रों और छंदों को लिखने वाली महिलाएं थी |

ऋग्वेद सबसे पुराना और प्रथम वेद है, जिसमें 1028 सूक्तों के माध्यम से देवताओं की स्तुति की गई है | सामदेव को संगीत का वेद कहा जाता है | यजुर्वेद में यज्ञ और कर्मकांड के नियमों के वेद है और इसमें गद्य और पद्य दोनों में मंत्र है | अथर्ववेद में सामान्य जीवन से संबंधित मंत्र, औषधियाँ, जादू–टोना और दैनिक जीवन के विषय सम्मिलित है |

भारतीय ज्ञान परंपरा में महिलाओं का योगदान किस प्रकार रहा है इसे हम विभिन्न कालों के माध्यम से देखेंगे –

वैदिक काल – ज्ञान और दर्शन: गार्गी वाचक्नवीने जनक के दरबार में आयोजित ब्रह्मविद्या संबंधी शास्त्रार्थ में याज्ञवल्क्य जैसे महर्षियों को कठोर प्रश्नों से चुनौती दी थी | तो मैत्रीयी ने आत्मा और अमरत्व के प्रश्नों पर गहन चिंतन प्रस्तुत किया था | इसके साथ लोपामुद्रा, अपाला और विश्वतारा जैसी ऋषिकाओं ने ऋग्वेद में मन्त्रों की रचना की | लगभग 27 स्त्री ऋषिकाओं ने मंत्रों की रचना की | इस काल में शिक्षा का अधिकार स्त्रियों को समान था | 'उपनयन संस्कार' केवल पुरुषों के लिए ही नहीं बल्कि स्त्रियों के लिए भी प्रचलित था | (अल्टेकर, 1959) पूरे इतिहास में, हमारी संस्कृति कई हमलों के बावजूद गर्व के साथ विकसित हुई है | इसका कारण वैदिक मूल्य और प्राचीन ज्ञान परंपरा है जिस पर यह आधारित है | अर्थात वैदिक युग में भारतीय ज्ञान परंपरा सक्रिय रही थी |

उत्तर वैदिक काल: उत्तर वैदिक काल में स्त्रियों की शिक्षा और सार्वजनिक भूमिका सीमित होने लगी | मनुस्मृति और धर्मशास्त्रों में स्त्रियों को अपने परिवार तक ही सीमित रहने का निर्देश मिला| इस काल में अपाला, विश्वतारा, लोपामुद्रा जैसी ऋषिकाओं के उदाहरण मिलते हैं | स्मृति काल में नारी केवल पत्नी–धर्म तक सीमित रहने लगी |

शास्त्रीय और दार्शनिक युग: इस युग में स्त्रियों ने अपने दर्शन और मीमांसा में अपनी भौतिक क्षमता का परिचय दिया | 8 वीं शताब्दी में शंकराचार्य और प्रकाण्ड विद्वान मंडल मिश्र के बीच शास्त्रार्थ हुआ था | उसमें मंडल मिश्र की पत्नी 'उभयभारती' जिसे शारदा का अवतार माना जाता था | उन्होंने शंकराचार्य के विजय होने पर अनेक प्रश्न पूछे जो कामशास्त्र पर आधारित थे | जिसमें शंकराचार्य निरुत्तर हुए |

साथ ही 12 वीं सदी की लीलावती के नाम से महान गणितज्ञ भास्कराचार्य ने अपने ग्रंथ का नाम अपनी पुत्री लीलावती के नाम से प्रसिद्ध किया |

भक्तिकाल: भारत में नारे के लिए अनेक चुनौतियां थी | जैसे – सामजिक बंधन, पर्दा प्रथा, बाल विवाह आदि | इस काल में शिक्षा और ज्ञान परंपरा तक उनकी पहुँच सिमित थी फिर भी भक्ति आंदोलन में विविध क्षेत्रों में उन्होंने अपनी पहचान बनाई | इस काल में मीराबाई, दयाबाई, सहजोबाई, जनाबाई आदियोंने हुरु महिमा और भक्ति पर अपनी कवितायें लिखी | कर्नाटक में अक्का महादेवी ने ज्ञान, दर्शन और रहस्यवाद में अमूल्य योगदान दिया | इस काल में महिलाओंने साहित्य, संगीत, प्रशासन और कलाक्षेत्र में अपनी विशिष्ठ पहचान बनायी | कश्मीर की लल्लेश्वरी ने कश्मीरी भाषा में अपने रहस्यवादी वाखों को कविताओं के माध्यम से अद्वैत शैव दर्शन का प्रचार किया |

उच्च और कुलीन वर्ग की महिलाएं निजी शिक्षकों द्वारा साहित्य, भाषा (संस्कृत, फ़ारसी, प्राकृत), संगीत और चित्रकला सीखती थीं | मुगल काल में गुलबदन बेगम (हुमायूंनामा) और जेबुन्निसा जैसी महिलाओं ने साहित्य में योगदान दिया | राजपूत और मुगल

दरबारों में महिलाएं नृत्य, संगीत और चित्रकला में निपुण थीं | संक्षेप में, मध्यकाल में नारी ज्ञान की मुख्यधारा से दूर हुई, लेकिन भक्ति और सांस्कृतिक क्षेत्रों के माध्यम से उनकी वैचारिक अभिव्यक्ति जारी रही |

आधुनिक काल: ब्रिटिश काल में शिक्षा सुधार आंदोलन हुए जिससे स्त्रियों के लिए नए अवसर मिले | स्त्रियों की शिक्षा और अधिकारों के लिए नए अवसर मिलें | इस काल में स्वामी दयानन्द सरस्वती, राजा राम मोहन रॉय, महात्मा ज्योतिबा फुले, सर्वपल्ली राधाकृष्णन जैसे पुरूषोंने अग्रसर भूमिका निभायी | महिलाओं की शिक्षा और अधिकारों के लिए सावित्रीबाई फुले ने ज्योतिबा फुले के साथ कदम बढ़ाया | इस वक्त उन्होंने समाज का विद्रोह भी सहन किया | उन्होंने जातिवाद, बाल विवाह, सती प्रथा का विरोध किया और महिला शिक्षा व विधवा पुनर्विवाह के लिए जीवन समर्पित कर दिया | लड़कियों के लिए पहली पाठशाला उन्होंने ही शुरू की | विद्यालय खोलने के बाद, रूढ़िवादी समाज ने उनका बहुत विरोध किया, उन पर कीचड़ और गोबर फेंका गया, लेकिन उन्होंने उसका डटकर सामना किया | उन्होंने बालहत्या प्रतिबंधक गृह की निर्मिति की | विधवाओं के मुंडन प्रथा को रोका | प्लेग जैसी महामारी के दौरान लोगों की सेवा की |

भारत की पहली महिला चिकित्सक डॉ. आनंदीबाई जोशी ने विज्ञान और चिकित्सा के क्षेत्रों में भारतीय महिलाओं को मार्ग दिखाया | पंडिता रमाबाई जो संस्कृत की प्रकांड विदुषी थी, इन्हे कलकत्ता विश्वविद्यालय ने सरस्वती और पंडिता की उपाधि से नवाजा था, सरोजिनी नायडू जो एक प्रमुख भारतीय स्वतंत्रता सेनानी, कवयित्री और महिला अधिकार समर्थक थीं, जिन्हें उनकी मधुर कविताओं के कारण 'भारत कोकिला' (Nightingale of India) कहा जाता है, विजयलक्ष्मी पंडित जो स्वतंत्र भारत की पहली महिला राजदूत (सोवियत संघ, अमेरिका, ब्रिटेन) रहीं, साथ ही उन्होने भारतीय राजनीति और कूटनीति में महिलाओं के लिए एक नया अध्याय लिखा, अरुणा आसफ अली जिन्होंने महिलाओं के अधिकारों के लिए काम किया और 1954 में नेशनल फेडरेशन ऑफ इंडियन वूमेन (NFIW) की सह–स्थापना की थी आदि महिलाओं का स्त्री शिक्षा की पुनर्स्थापना में योगदान रहा है | इन सभी महिलाओंने स्वत्रंत्रता आन्दोलनों में, शिक्षा और राजनीति क्षेत्रों में सक्रीय भूमिका निभायी है | इन्होने यह सिद्ध किया कि भारतीय नारी केवल पारम्पारिक भूमिकाओं तक सिमित नहीं है बल्कि वह समाज और राष्ट्र की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है |
भारतीय इतिहास और संस्कृति की यात्रा में नारी की भूमिका बहुआयामी रही है | पत्रकारिता, साहित्य और समाज सुधार आंदलनों में हिस्सा लेना इसी काल की घटनाएं हैं |

वर्तमान काल: वर्तमान काल में स्त्री भारतीय शिक्षा, शोध, विज्ञानं, साहित्य और सामजिक विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है | लोक–परम्पराओं, संस्कारों, भाषा, खान–पान और आयुर्वेद के सूक्ष्म ज्ञान को पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित करने में मुख्य भूमिका निभा रही हैं | कला, वाणिज्य और विज्ञान जैसे विषयों में आगे बढ़ रही है | आज उसे संविधान में भी सामान अधिकार मिला है जिसके कारण वह अपने निर्णय स्वयं ले रही है | इसरो (ISRO) के सफल अंतरिक्ष मिशनों, जैसे चंद्रयान–3 और मंगलयान में महिला वैज्ञानिकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिसमें रितु करिधल, एम. वनिता, और नंदिनी हरिनाथ जैसी महिला इंजीनियरों ने मिशन डायरेक्टर और प्रोजेक्ट डायरेक्टर के रूप में देश का नाम रोशन किया है | 2020 में नई शिक्षा निति के आने से और भी परिवर्तन हुए है | जिसका उद्देश्य भारतीय शिक्षा प्रणाली को आधुनिक, लचीला और कौशल–आधारित बनाकर 2030 तक 100: सकल नामांकन अनुपात (GER) हासिल करना है | इसमें कला, संस्कृति, विज्ञानं, तकनीक और दर्शन के साथ – साथ समावेशी शिक्षा और लैंगिक समानता पर बल दिया गया है | आज जाती, धर्म, जेंडर के आधार पर होने वाले भेदभाव को मिटाया जा रहा है | इंटरनेट और AI (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) के माध्यम से ज्ञान प्रसार में पुनर्जागरण किया जा रहा है |
भारतीय ज्ञान परंपरा स्वतंत्रता, बंधुत्व और विश्वशांति के सिद्धांतों को स्वीकार करती नजर आती है | और आधुनिक नारी परंपरा के मूल्यों और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाकर एक सशक्त समाज का निर्माण कर रही है |

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि, वैदिक काल से आज वर्त्तमान स्तिति तक महिलाओं की स्थिति अत्यंत संघर्षमयी रही है | उसके निरन्तर ज्ञान, संस्कृति और समाज को समृद्ध किया | उसने हर युग में अपने लिए अवसर ढूंढे | उसने अपना योगदान दिया | वैदिक काल में जिन महिलाओं ने जिसप्रकार अपना योगदान दिया वैसे ही और उतना ही योगदान आज वर्त्तमान स्थिति में महत्वपूर्ण है | सावित्रीबाई फुले, सरोजिनी नायडू, विजयलक्ष्मी पंडित, अरुणा आसफ अली इन महिलाओं का योगदान हम कभी नहीं भूल सकते | वैदिक काल में भी भारतीय ज्ञान परंपरा को महत्व था और आज भी उसका महत्त्व उतना ही है |
भारतीय परंपरा में स्त्री केवल ज्ञान की अधिष्ठात्री नहीं थी बल्कि वह स्वयं, विद्या, दर्शन और अध्यात्म की प्रकाशक रही है | वर्तमान काल में भी उसे भविष्य की शैक्षिक, सामाजिक संरचना में निरन्तर परिवर्तन किया है | आज भारतीय ज्ञान परंपरा में उसके योगदान का पुनःमूल्यांकन करने की आवश्यकता है | यह आलेख इस बात को प्रमुखता से रेखांकित करता है कि महिलाओं ने न केवल ज्ञान को अपनी स्मृतियों और आचरण में सहेजा है, बल्कि समय–समय पर उसे नई दिशा भी प्रदान की है और निरंतर करती रहेगी ।

संदर्भ

1. ऋग्वेद संहिता (भाग १–४), संपादक, सायणाचार्य भाष्य सहित, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी, संस्करण नवीनतम संस्कृत हिंदी अनुवाद संस्करण)२०२६, 15 वां पुनर्मुद्रण)
2. भारतीय नारी और वेदकालीन संस्कृति, लेखक डॉ. शारदा अरविंद, प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली. संस्करण 2014 तृतीय संस्करण
3. Women's Education in Indian Knowledge Tradition and Its impact on Society - Dr. Roshan Kumar Jhariya
4. Altekar AS. The position of women in Hindu civilization. Delhi: Motilal Banarsidass; c1959.